International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 03 Ver. V ||March. 2018 || PP. 36-41

भारतीय सैन्य बलों की युद्ध क्षमता पर अध्ययन

डॉ० दीप कुमार श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर
रक्षा अध्यन विभाग एस. एम. कॉलेज चंदौसी

<u>प्रस्तावना</u>

भारतीय सशस्त्र बल भारत गणराज्य के "**सैन्य बल**" हैं । इसमें तीन वर्दीधारी सेवाएं भी शामिल हैं।

1- भारतीय सेना

2-भारतीय नौसेना

3- भारतीय वायु सेना

इसके अतिरिक्त, भारतीय सशस्त्र बलों को केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल , असम राइफल्स ,भारतीय तट रक्षक और विशेष सीमा बल और विभिन्न अंतर-सेवा कमानों और संस्थानों जैसे सामरिक बल कमान , अंडमान और निकोबार द्वारा समर्थित किया जाता है। कमांड व एकीकृत रक्षा कर्मचारी । भारत के राष्ट्रपति भारतीय सशस्त्र बलों के सर्वोच्च कमांडर हैं, लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए कार्यकारी अधिकार और जिम्मेदारी भारत के प्रधान मंत्री और उनके चुने हुए कैबिनेट मंत्रियों में निहित है । भारतीय सशस्त्र बल भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के प्रबंधन के अधीन हैं । 1.4 मिलियन से अधिक सक्रिय कर्मियों की ताकत के साथ, यह दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है और दुनिया की सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेना है।यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा रक्षा बजट भी है। ग्लोबल फायरपॉवर इंडेक्स रिपोर्ट ने इसे चौथी सबसे शक्तिशाली सेना के रूप में सूचीबद्ध किया है।

भारतीय सशस्त्र बल कई प्रमुख सैन्य अभियानों में लगे हुए हैं, जिनमें शामिल हैं: 1947 , 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध ,पुर्तगाली-भारतीय युद्ध , चीन-भारतीय युद्ध , 1967 चो ला घटना , 1987 चीन -भारतीय झड़प , कारगिल युद्ध , और सियाचिन संघर्ष दूसरों के बीच। सशस्त्र सेना झंडा दिवस , 7 दिसंबर को भारत प्रतिवर्ष अपने सशस्त्र बलों और सैन्य कर्मियों का सम्मान करता है । परमाणु तिकड़ी से लैस,भारतीय सशस्त्र बल लगातार आधुनिकीकरण के दौर से गुजर रहे हैं, फ्यूचरिस्टिक सोल्जर सिस्टम और मिसाइल डिफेंस सिस्टम जैसे क्षेत्रों में निवेश के साथ ।

रक्षा मंत्रालय का रक्षा उत्पादन विभाग भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरणों के स्वदेशी उत्पादन के लिए जिम्मेदार है। इसमें 16 रक्षा सार्वजनिक उपक्रम शामिल हैं: HAL , BEL , BEML , BDL , MDL , GSL , GRSE , मिधानी , AWEIL , GIL , TCL , AVNL , MIL , YIL और IOL ।भारत रक्षा उपकरणों के सबसे बड़े आयातकों में से एक हैरूस, इज़राइल, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका सैन्य उपकरणों के शीर्ष विदेशी आपूर्तिकर्ता हैं।भारत सरकार, मेक इन इंडिया पहल के हिस्से के रूप में, स्वदेशी निर्माण और रक्षा के लिए आयात पर निर्भरता कम करना चाहती है।

<u>कीवर्ड-</u> आधुनिकीकरण, सिस्टम, ससस्त्र, उत्पादन।

<u>सैन्य बल का इतिहास</u>

भारत के सैन्य बल का इतिहास बहुत ही विस्तृत है, जो कई सहस्राब्दी पुराना है। सेनाओं का पहला संदर्भ वेदों के साथ-साथ महाकाव्य रामायण और महाभारत में भी मिलता है । विशेष रूप से तीरंदाजी पर शास्त्रीय भारतीय ग्रंथों और सामान्य रूप से मार्शल आर्ट को धनुर्वेद के रूप में जाना जाता है ।

भारतीय समुद्री इतिहास 5,000 साल पुराना है। यह भी माना जाता है कि पहला ज्वारीय गोदी लोथल में 2300 ईसा पूर्व के आसपास सिंधु घाटी सभ्यता काल के दौरान गुजरात तट पर मांगरोल के वर्तमान बंदरगाह के पास बनाया गया था। लगभग 1500 ईसा पूर्व लिखा गया ऋग्वेद , वरुण को समुद्री मार्गों के ज्ञान का श्रेय देता है और नौसेना अभियानों का वर्णन करता है। प्लावा नामक एक जहाज के पार्श्व पंखों का संदर्भ है , जो तूफान की स्थिति में जहाज को स्थिरता प्रदान करता है। एक कम्पास, मत्स्य यंत्रचौथी और पांचवीं शताब्दी ईस्वी में नेविगेशन के लिए इस्तेमाल किया गया था। प्राचीन भारत में जहाजों को समर्पित एक संगठन का सबसे पहला ज्ञात संदर्भ चौथी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य साम्राज्य में है। शक्तिशाली सेनाओं में शामिल थे: मौर्य , सातवाहन , चोल , विजयनगर , मुगल और मराठा साम्राज्य । सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु और सलाहकार चाणक्य के अर्थशास्त्र में नवाध्यक्ष (संस्कृत के लिए) के तहत जलमार्ग के राज्य विभाग पर एक पूरा अध्याय समर्पित है।जहाजों का अधीक्षक) शब्द, नवद्वीपंतरागमनम (संस्कृत में "जहाजों द्वारा अन्य भूमि के लिए नौकायन," अर्थात अन्वेषण) वैदिक पाठ, बौधायन धर्मशास्त्र में शब्द, समुद्रसाम्यनम की व्याख्या के रूप में प्रकट होने के अलावा इस पुस्तक में दिखाई देता है ।

भारत ने 1947 , 1965 , 1971 और 1999 में अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ और 1962 और 1967 में चीन के साथ चार बड़े युद्ध लड़े । 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की जीत ने बांग्लादेश को स्वतंत्र देश बनाने में मदद की । 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में, पाकिस्तान ने भारत के साथ विवादित क्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर में पर्यटक अभियानों का आयोजन शुरू किया। इस विकास से चिढ़कर, अप्रैल 1984 में भारत ने सफल ऑपरेशन मेघदूत की शुरुआत कीजिसके दौरान इसने 70 किलोमीटर (41-मील) लंबे सियाचिन ग्लेशियर, और इसके सभी सहायक ग्लेशियरों के साथ-साथ ग्लेशियर के तुरंत पश्चिम में साल्टोरो रिज के तीन मुख्य दर्रे- सिया ला , बिलाफोंड पर नियंत्रण हासिल कर लिया।

<u>टाइम पत्रिका के अनुसार ,</u> भारत ने सियाचिन में अपने सैन्य अभियानों के परिणामस्वरूप 1,000 वर्ग मील (3,000 किमी 2) से अधिक क्षेत्र प्राप्त किया।1987 और 1989 में पाकिस्तान ने ग्लेशियर को फिर से लेने का प्रयास किया लेकिन असफल रहा। भारतीय विजय के साथ संघर्ष समाप्त हुआ। 2003 से युद्धविराम है।

<u>इंडियन पीस कीपिंग फोर्स (IPKF) ने 1987-1990</u> में भारत-श्रीलंका समझौते की शर्तों के तहत तमिल टाइगर्स को निरस्त्र करने के लिए उत्तरी और पूर्वी श्रीलंका में एक मिशन चलाया । [59] यह भारतीय सेना के लिए एक कठिन लड़ाई थी, जिसे एक अपरंपरागत युद्ध के लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया था। लगभग 1,200 कर्मियों और कई T-72 टैंकों को खोने के बाद , भारत ने अंततः श्रीलंकाई सरकार के परामर्श से मिशन को छोड़ दिया। जिसे ऑपरेशन पवन के रूप में लेबल किया गया था , भारतीय वायु सेना ने श्रीलंका के भीतर और भीतर लगभग 70,000 उड़ानें भरीं।

21 वीं सदी की शुरुआत में उपमहाद्वीप में एक क्षेत्रीय भूमिका से लेकर अदन की खाड़ी से लेकर मलक्का जलडमरूमध्य तक फैले हिंद महासागर क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका के लिए वैश्विक मंच पर भारत के लिए एक पुनर्स्थापन देखा गया । भारत के प्रभाव के क्षेत्र में न केवल दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप, बल्कि उत्तरी हिंद महासागर क्षेत्र, पश्चिम में अफ्रीका के पूर्वी समुद्री तट से लेकर पूर्व में मलक्का जलडमरूमध्य तक, और ईरान, अफगानिस्तान, को भी शामिल करने की आवश्यकता है। मध्य एशियाई गणराज्य (सीएआर), चीन और म्यांमार। एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भारत की विश्वसनीयता परमाणु प्रतिरोध सहित संस्थागत स्थिरता,

आर्थिक विकास और सैन्य शक्ति पर निर्भर होगी। दोनों देशों के साथ चल रही शांति प्रक्रियाओं के बावजूद, चीन और पाकिस्तान के साथ विवादित सीमाओं के लंबे खंड, और उनके कब्जे वाले बड़े क्षेत्र अभी भी प्रमुख बाधा बने हुए हैं।

एंटी-पायरेसी मिशन

भारत ने क्षेत्र में गश्त करने के लिए बड़े आईएनएस मैसूर को तैनात करके अदन की खाड़ी में अपने नौसैनिक बल को बढ़ाने की मांग की । सोमालिया ने अमेरिका और फ्रांस सहित राज्यों की अपनी सूची में भारत को भी शामिल किया, जिन्हें समुद्री डकैती की जांच के प्रयास में समुद्र तट से 12 समुद्री मील (22 किमी; 14 मील) तक अपने क्षेत्रीय जल में प्रवेश करने की अनुमति है।] एक भारतीय नौसेना अधिकारी ने इस तरह की समुद्री डकैती की जांच करने के लिए भारत के विशेषाधिकार को स्वीकार करने वाले एक पत्र की प्राप्ति की पुष्टि की। "हमने संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के मद्देनजर अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती को दबाने में बड़ी भूमिका निभाने के लिए सोमाली सरकार से अनुरोध किया था। टीएफजी सरकार ने हाल ही में अपनी मंजूरी दे दी है।"नवंबर 2008 में, एक भारतीय नौसेना के युद्धपोत ने अदन की खाड़ी में हमले के बाद एक संदिग्ध सोमाली समुद्री डाकू जहाज को नष्ट कर दिया। सुरक्षा परिषद को सौंपी गई सोमालिया पर एक रिपोर्ट में, संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने कहा, "मैं समुद्री डकैती और जहाजों के खिलाफ सशस्त्र डकैती से लड़ने के लिए सोमालिया की संक्रमणकालीन संघीय सरकार के साथ सहयोग करने के लिए भारत और रूसी संघ की सरकारों के फैसले का स्वागत करता हूं। " भारत ने इस क्षेत्र में चार और युद्धपोत तैनात करने की इच्छा भी व्यक्त की ।2010-09-06 को भारतीय समुद्री कमांडो की एक टीम(मार्कोस) एमवी जग अर्नव पर सवार हुए और हमला करने वाले लुटेरों पर काबू पा लिया - सात भारी हथियारों से लैस सोमाली और एक यमनी नागरिक। सात साल की समय सीमा में भारत ने समुद्री डकैती से निपटने के लिए 52 युद्धपोत तैनात किए, जिसके परिणामस्वरूप 65 डिग्री पूर्व तक का क्षेत्र समुद्री लुटेरों से मुक्त हो गया।

भारतीय सैन्य बल की युद्ध क्षमता

पैदल सेना

पैदल सैनिक वह होते हैं, जो दुश्मन को उसके बंकर से बाहर धकेलता है और उसे हार मानने के लिए मजबूर करता है। "आखिरी आदमी आखिरी दौर" तक दुश्मन के हमले के खिलाफ दृढ़ता से मैदान में रहता है। सभी सेनाओं की तरह दुनिया भर में, इन्फैंट्री भारतीय सेना की प्रमुख शाखा है। यह कोर में इन्फैंट्री के साथ है कि शेष सेना को युद्ध और शांति दोनों के दौरान कॉन्फ़िगर किया गया है। यदि सेना राष्ट्रीय सुरक्षा का अंतिम गढ़ है, तो इन्फैंट्री इसकी अंतिम स्थिति है। ताकत।

1947 के बाद से सभी युद्ध इन्फैन्ट्री सैनिकों के वीरतापूर्ण कार्यों के साक्षी रहे हैं जिन्होंने राष्ट्र की अखंडता और संप्रभुता की रक्षा के लिए प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों और इलाकों में सफलतापूर्वक अपना कार्य किया है। सियाचिन ग्लेशियर की चौंका देने वाली ऊंचाई, उत्तर-पूर्व के अभेद्य जंगलों से लेकर थार रेगिस्तान की चिलचिलाती गर्मी तक, भारतीय सीमाएँ पैदल सैनिकों के हाथों में हैं। कम तीव्रता वाला संघर्ष अभियान एक निरंतर और शायद सेना के लिए सबसे लंबा ऑपरेशन रहा है। उत्तर-पूर्व, जम्मू-कश्मीर और अतीत में, पंजाब में उग्रवाद इन्फैंट्री केंद्रित संचालन के जीवंत उदाहरण रहे हैं जो विशिष्ट रूप से जटिल, नाजुक और संवेदनशील हैं। इन्फैंट्रीमेन ने हमेशा अच्छा प्रदर्शन किया है।

हमारी पैदल सेना को मशीनीकृत करने की आवश्यकता पहली बार 1965 के युद्ध के बाद महसूस की गई थी। l969 में पहला अस्थायी कदम उठाया गया था, जब 1 मद्रास ने एपीसी टोपाज़ से लैस होने वाली पहली पैदल सेना इकाई बनने के लिए अपनी टोपी में एक और 1 जोड़ा। पहले जाट एलआई ने जल्द ही पीछा किया, और वर्ष 1970 तक, हमारी दस बेहतरीन पैदल सेना इकाइयाँ APCs या रथों, अर्थात् BTR, SKOT

और TOPAZ की एक सरणी से सुसज्जित थीं। 1971 के युद्ध में इनमें से कुछ बटालियनों ने पहली बार बख़्तरबंद इकाइयों के साथ युद्ध समूहों के हिस्से के रूप में दोनों मोर्चों पर कार्रवाई में भाग लिया। इस गतिशील भुजा की युद्ध क्षमता को पूरी तरह से महसूस करने के लिए, इन बटालियनों को एक एकीकृत प्रशिक्षण और एक सामान्य युद्ध दर्शन प्रदान करने की आवश्यकता महसूस की गई। मौजूदा बटालियनों को एक साथ एक बैनर के तहत एक सामान्य पहचान के साथ समूहित करने का विचार जनरल केवी कृष्ण राव द्वारा किया गया था। 1973 में पीवीएसएम और जनरल के सुंदरजी, एवीएसएम, पीवीएसएम, एडीसी द्वारा क्रिस्टलीकृत। यह वे थे जिन्होंने मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री रेजिमेंट की औपचारिक स्थापना की। मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री भारतीय सेना की सबसे कम उम्र की रेजिमेंट है और 1776 से शुरू हुई सैन्य विरासत और अत्याधुनिक उपकरण प्रोफाइल का एक अनूठा मिश्रण है। 1977-78 में मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री इकाइयां बीएमपी-1 इन्फैंट्री कॉम्बैट व्हीकल (आईसीवी) से लैस थीं। मैकेनाइज्ड युद्ध के सामान्य युद्ध और प्रशिक्षण दर्शन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री रेजिमेंट को 02 अप्रैल 1979 को उठाया गया था और रेजिमेंट के मामलों को इन्फैंट्री महानिदेशालय से महानिदेशालय मैकेनाइज्ड फोर्सेज में स्थानांतरित कर दिया गया था। रेजिमेंट का गठन और पालन-पोषण रेजिमेंट के पहले कर्नल जनरल के सुंदरजी, पीवीएसएम, एडीसी की चौकस निगाहों में हुआ। पुरानी बटालियनों से जनशक्ति में पूलिंग करके नई बटालियनों को खड़ा किया गया। रेजिमेंटल क्रेस्ट बीएमपी-1 पर लगी एक राइफल संगीन है, रेजिमेंट के पैदल सेना और यंत्रीकृत पहलुओं का चित्रण। राष्ट्रपति ने 24 फरवरी 1988 को मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री रेजिमेंटल सेंटर (MIRC), अहमदनगर में एक अनूठी परेड में रेजिमेंट को ध्वज प्रदान किया, जहां 14 रंग रखे गए और 24 रंग प्रस्तुत किए गए।

<u>उपलब्धि</u> रेजिमेंट ने श्रीलंका में 'ऑपरेशन पवन', 'ऑपरेशन रक्षक' और 'ऑपरेशन विजय' में सक्रिय रूप से भाग लिया है। रेजिमेंट को लद्दाख और सिक्किम के उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में संचालन का अनूठा गौरव प्राप्त है। यह उभयचर, हेलीबॉर्न और हवाई संचालन में भी माहिर है। रेजिमेंट ने सोमालिया, अंगोला, सिएरा लियोन, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य और सूडान में संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान में सफलतापूर्वक भाग लिया है। रेजिमेंट भारतीय नौसेना के जहाज से संबद्ध है।

<u>सेना चिकित्सा कोर</u>

सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा (AFMS) लगातार पेशेवर उत्कृष्टता का पीछा करती है, और गुणवत्ता चिकित्सा देखभाल और उपचार द्वारा युद्ध और शांतिकाल दोनों में लड़ने वाले बलों के मनोबल को बनाए रखने के लिए बेहद समर्पित है। एएफएमएस अंतर-सेवा एकीकरण का एक मॉडल है जिसमें तीनों सेवाएं संयुक्त रूप से अपने ग्राहकों को व्यापक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने के कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं।

सेना चिकित्सा कोर के लोकाचार, कोर ध्वज और उसके शिखा में परिलक्षित होते हैं, तीन रंगों के साथ "डल चेरी, ओल्ड गोल्ड विथ ब्लैक, इन-बीच। ध्वज और शिखा, सकारात्मक स्वास्थ्य, सहायता, रोगों से मुक्ति को दर्शाता है। , रचनात्मकता, बुद्धि और उदारता, जो कोर आदर्श वाक्य सर्वे सन्तु निरामया का प्रतीक है - सभी रोग और अक्षमता से मुक्त हो सकते हैं।

एएफएमएस बड़े पैमाने पर गुणवत्तापूर्ण उपचारात्मक और निवारक सेवाएं और सामाजिक स्वच्छता का अभ्यास प्रदान करता है। कोर में चिकित्सा की सभी शाखाओं में कुछ सर्वोच्च योग्य सुपर-स्पेशलिस्ट, विशेषज्ञ और चिकित्सा अधिकारी हैं। एएफएमएस न केवल कुशल निवारक और उपचारात्मक सेवाएं प्रदान करने के लिए सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लागू करता है बल्कि हृदय, फेफड़े, गुर्दे की बीमारियों और कैंसर के उपचार के लिए विशेष उपचार सुविधाएं प्रदान करता है। सेना चिकित्सा कोर (एएमसी) सभी सेवा कर्मियों, उनके परिवारों की देखभाल करती है और पूर्व सैनिकों (ईएसएम) और उनके आश्रितों को ईसीएचएस के माध्यम से या नेपाल सहित दूरदराज के क्षेत्रों में आयोजित विभिन्न चिकित्सा शिविरों द्वारा चिकित्सा देखभाल प्रदान करने में समान महत्व देती है।आपदाओं और प्राकृतिक आपदाओं के समय चिकित्सा राहत प्रदान करने में एएफएमएस

हमेशा सबसे आगे रहा है और संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा बलों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अभिन्न अंग बन गया है। पिछले दो दशकों में तेजी से तकनीकी परिवर्तन और पालने से कब्र तक सेवा प्रदान करने की कोर की प्रतिबद्धता ने चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति की है। AFMS ने मेडिसिन और सर्जरी की लगभग सभी शाखाओं में विशेष रूप से कार्डियोलॉजी, कार्डियो-थोरेसिक सर्जरी, न्यूरोलॉजी और न्यूरो सर्जरी, रीनल ट्रांसप्लांटेशन, मैलिग्नेंट डिजीज ट्रीटमेंट, जॉइंट रिप्लेसमेंट आदि में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

आयुध कोर

सेना आयुध कोर आज एक ऐसा संगठन है जो सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम एक अच्छी तरह से जुड़ी हुई लॉजिस्टिक श्रृंखला में परिवर्तित हो गया है। शस्त्र से शक्ति के अपने आदर्श वाक्य के अनुसार, वे यह सुनिश्चित करते हैं कि लड़ने वाले सैनिकों को युद्ध के मैदान में अंतरंग और अत्याधुनिक समर्थन मिले।

'टस्कर्स' यह सुनिश्चित करते हैं कि आवश्यक साधन सही समय, सही स्थान और सही गुणवत्ता पर वितरित किए जाएं। पूर्णता के लिए प्रयास किया जाता है ताकि लड़ने वाले सैनिक को अपनी जरूरतों के लिए अपने कंधे पर हाथ न रखना पड़े। आज बड़ी चुनौती यह है कि अर्थव्यवस्था को प्रयास के साथ संतुलित किया जाए और 'हिरन के लिए सबसे अच्छा धमाका' प्राप्त किया जाए।

ईएमई की वाहिनी

कोर ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर्स (ईएमई) के 'सोल्जर-क्राफ्ट्समैन', जिन्हें लोकप्रिय रूप से ईगल्स कहा जाता है, अपने आदर्श वाक्य 'वर्क इज सुप्रीम ड्यूटी' के साथ सेना के उपकरणों की पूरी रेंज और गहराई के लिए एकीकृत इंजीनियरिंग सहायता प्रदान करके उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। चाहे वह वाहन हों, टैंक हों, दूरसंचार उपकरण हों, रडार हों या सेना के कोई अन्य बोधगम्य उपकरण हों, डिजाइन से लेकर डिसाइड तक यानी 'गर्भ से कब्र तक' का समर्थन। युद्धों में बड़ी संख्या में आधुनिक और परिष्कृत उपकरणों का उपयोग शामिल होता है और ईएमई किसी भी युद्ध को जीतने के लिए सेना की परिचालन तैयारियों की स्थिति और मुकाबला प्रभावशीलता में सहायता करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। यह उपकरणों की पूरी श्रृंखला की परिचालन फिटनेस सुनिश्चित करता है। यह बल आधुनिकीकरण कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी परिवर्तन के प्रबंधन का भी नेतृत्व करता है।

राष्ट्रीय राइफल्स

राष्ट्रीय राइफल्स देश में उग्रवाद का मुकाबला करने के लिए 1990 में गठित एक विशेषज्ञ विशिष्ट बल है और आज सेना का प्रमुख उग्रवाद विरोधी बल है। राष्ट्रीय राइफल्स ऑलिव ग्रीन एकीकरण का एक उत्कृष्ट शास्त्रीय उदाहरण है, जिसमें सभी हथियारों और सेवाओं से रैंक और फाइल तैयार की गई है। इसकी प्रभावकारिता इसकी अभूतपूर्व परिचालन सफलता में परिलक्षित होती है जो एक कठोर चयन प्रक्रिया, प्रशिक्षण, बढ़ी हुई गतिशीलता, निगरानी, अग्नि-शक्ति और सुरक्षा क्षमताओं का परिणाम है।

सेना सेवा कोर

युद्ध सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन का मामला है, दूसरी जगह, आपूर्ति का मामला और तीसरे में, विनाश का मामला"। यह उद्धरण उपयुक्त रूप से सेना सेवा कोर के कार्य का वर्णन करता है। यह कोर है, जो युद्ध के लिए जरूरी हर चीज को चलाती और बनाए रखती है, यानी एक सैनिक से लेकर किसी भी तरह के उपकरण, बड़े या छोटे। वाहनों, खच्चरों और कुलियों द्वारा चलते हुए, यह परिचालन योजनाओं के साथ मेल खाने के लिए निर्दोष रसद समर्थन सुनिश्चित करता है।

प्रादेशिक सेना

भारत में प्रादेशिक सेना की अवधारणा को बहुत पहले 1897 में पेश किया गया था, जब इसे 'स्वयंसेवकों' के रूप में उठाया गया था। 9 अक्टूबर 1949 को भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल श्री सी राजगोपालाचारी द्वारा इसकी स्थापना के बाद से। टेरिटोरियल आर्मी, जिसे टेरियर्स के नाम से भी जाना जाता है, ने एक लंबा सफर तय किया है और अपने कर्तव्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण से लोगों के दिलों में अपने लिए जगह बनाई है, जो सही मायने में आदर्श वाक्य सावधानि व शूरता को सही ठहराती है। प्रादेशिक सेना के लिए वैचारिक ढांचा इस मौलिक विचार पर आधारित है कि यह युद्ध के समय के रोजगार के लिए मौजूद होना चाहिए और शांति के समय के दौरान न्यूनतम लागत पर बनाए रखा जाना चाहिए।

इस अवधारणा में जीवन के सभी क्षेत्रों से अनुशासित, प्रशिक्षित और समर्पित नागरिकों को नियमित सेना के संसाधनों का समर्थन, पूरक और वृद्धि करने के लिए रोजगार शामिल है। टेरियर्स को बढ़ाने का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय आपात स्थितियों के दौरान अपने स्थिर कर्तव्यों की नियमित सेना को बढ़ाने और राहत देने और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने और आवश्यक सेवाओं के रखरखाव में नागरिक अधिकारियों को सहायता प्रदान करने में सक्षम नागरिक सेना बनाना था। टीए नियमित सेना को बढ़ाने की क्षमता के साथ नियमित सेना का एक महत्वपूर्ण सहायक है।

उपसंहार

भारतीय सैन्य बल के युद्ध क्षमता भारत की रक्षा और रक्षा नीति सहित उसके हर हिस्से के लिए अनिवार्य है। यह अंतर-सेवा संगठनों, रक्षा लेखा विभाग, कैंटीन भंडार विभाग (सीएसडी), तट रक्षक, राष्ट्रीय कैडेट कोर, सीमा सड़क संगठन, रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान, राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज आदि से संबंधित है। यह रक्षा बजट के लिए जिम्मेदार है, रक्षा भूमि और छावनियां, संसद से संबंधित मामले और विदेशों के साथ रक्षा सहयोग,इसकी अध्यक्षता रक्षा सचिव करते हैं। जिनकी सहायता महानिदेशक (अधिग्रहण), अतिरिक्त सचिव और संयुक्त सचिव करते हैं। रक्षा सचिव रक्षा मंत्रालय में अन्य विभागों यानी डीएमए, डीडीपी, डीईएसडब्ल्यू और डीडीआरएंडडी की गतिविधियों के समन्वय के लिए भी जिम्मेदार हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भारतीय सेना सिद्धांत" । मुख्यालय सेना प्रशिक्षण कमान। अक्टूबर 2004. मूल से 1 दिसंबर 2007 को पुरालेखित । 1 दिसम्बर 2007 को पुनःप्राप्त ।

सामरिक अध्ययन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (3 फरवरी 2014)। सैन्य संतुलन 2014 । लंदन : रूटलेज . पीपी। 241-246। आईएसबीएन 978-1-85743-722-5।

द मिलिट्री बैलेंस 2010 । ऑक्सफोर्डशायर: रूटलेज। 2010. पीपी। 351 , 359-364। आईएसबीएन 978-1-85743-557-3।

भारतीय सेना के आधुनिकीकरण के लिए एक बड़े प्रयास की आवश्यकता है" । भारत सामरिक । फरवरी 2010। 6 सितंबर 2013 को मूल से संग्रहीत । 10 जुलाई 2013 को पुनःप्राप्त ।

"2027 तक भारत के सैन्य आधुनिकीकरण को मंजूरी मिली" । रक्षा अब । 2 अप्रैल 2012। मूल से 29 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित । 10 जुलाई 2013 को पुनःप्राप्त ।

ब्रिटिश सेना का ऑक्सफोर्ड इतिहास

"मंत्रालय के बारे में" । रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। 9 मई 2012 को मूल से संग्रहीत । 31 मार्च 2011 को पुनःप्राप्त ।